



द्रव्य

पाठ-५

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

द्रव्य

गुणों के समूह को
द्रव्य कहते हैं



द्रव्य कितने
होते हैं?

छह

कौन-कौन से



धर्म

जीव

पदगल

आकाश

अधर्म

काल



जिसमें ज्ञान
पाया जाए

जीव किसे
कहते हैं?





पुद्गल किसे कहते हैं?

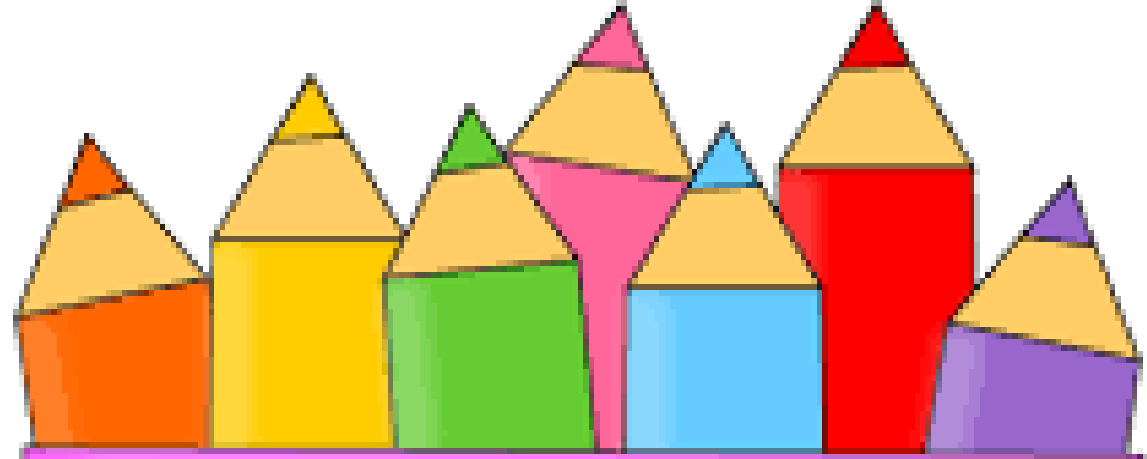


जिसमें स्पर्श,
रस, गंध, वर्ण
पाया जाए





धर्म-द्रव्य
किसे
कहते हैं?



» यहाँ पूजा-पाठ को धर्म नहीं
कहा है

» ये धर्म-द्रव्य की बात है
» जो स्वयं चलते हुए जीव और
पुद्गल को चलने में निमित्त है
» जैसे- स्वयं चलती मछली को जल

अधर्म-द्रव्य किसे कहते हैं?



» यहाँ पाप को अधर्म नहीं कहा है

» ये अधर्म-द्रव्य की बात है

» गमनपूर्वक

» ठहरने वाले

» जीव और पुद्गल को

» जो ठहरने में निमित्त है

» जैसे- पथिक को पेड़ की छाया

धर्म और अधर्म-द्रव्य कहाँ हैं?



सम्पूर्ण लोक में –
- तिल में तेल के समान
फैले हुए हैं



»ऊपर नीला दिखने वाला
कौन-सा द्रव्य है?

»पुद्गल

»फिर आकाश क्या है?

»जो सभी द्रव्यों को रहने में
निमित्त हो

आकाश

द्रव्य



» ऐसी कौन-सी जगह
है जहाँ जगह नहीं है?

» आकाश का दूसरा
नाम जगह ही है

» इसलिये आकाश
सर्वत्र है

द्रव्य

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



काल-द्रव्य किसे कहते हैं

» जो समस्त द्रव्यों के
परिणामन (परिवर्तन) में
निमित्त हो

» काल द्रव्य की अवस्था का
नाम समय है

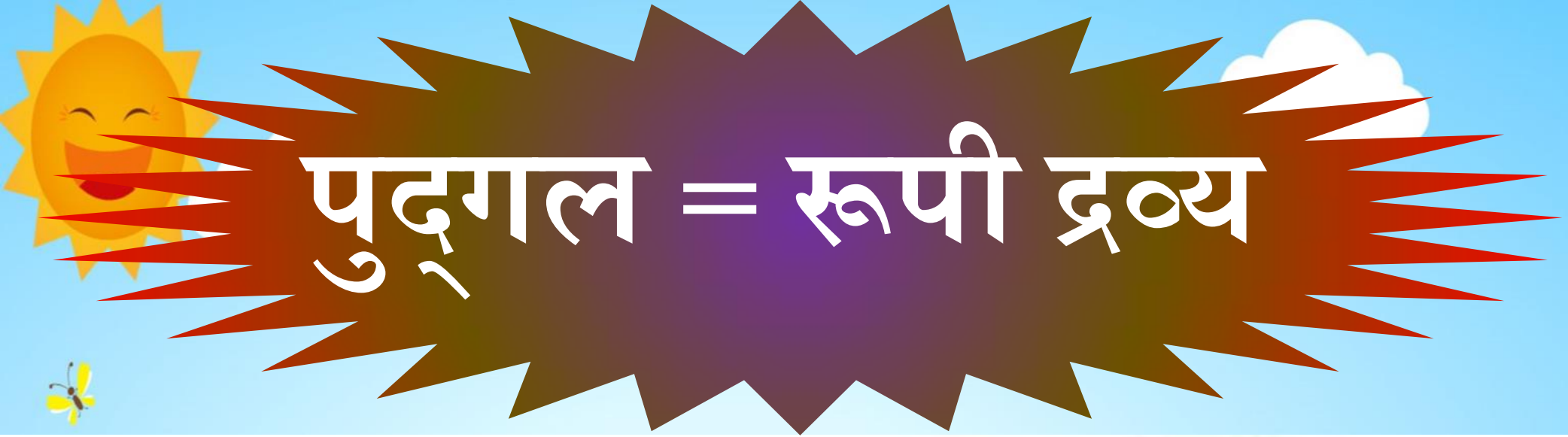
अथवा

» दिन, घण्टा, महिना, वर्ष
आदि का नाम काल है



कौन-सा द्रव्य किसको निमित्त होता है?

द्रव्य	किसको निमित्त?	किसमें?
धर्म द्रव्य	जीव और पुद्गल को	चलने में
अधर्म द्रव्य	जीव और पुद्गल को	ठहरने में
आकाश	सभी को	रहने में
काल	सभी को	बदलने में



1

पुद्गल को छोड़कर
शेष पाँच द्रव्य

2

अरूपी (अमूर्तिक) हैं

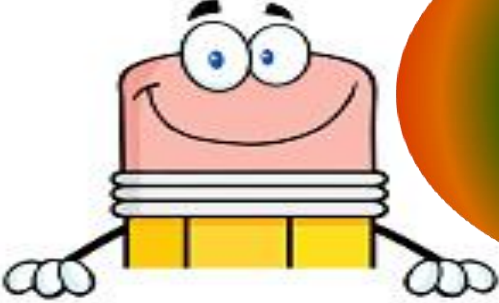
3

अरूपी =

जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण न हो

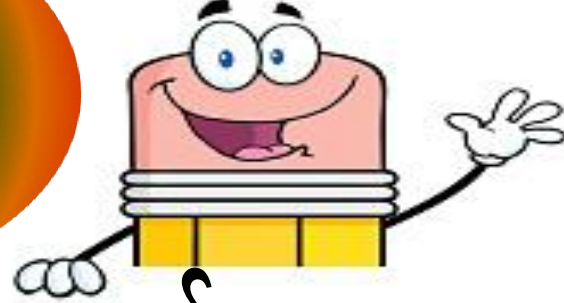
अजीव द्रव्य कितने हैं?

पाँच



पुद्गल

द्रव्य



धर्म द्रव्य



अधर्म द्रव्य



आकाश द्रव्य



काल द्रव्य

	दिखने वाला	अजीब
जीव	नहीं	नहीं
पुद्गल	हाँ	हाँ
धर्म	नहीं	हाँ
अधर्म	नहीं	हाँ
आकाश	नहीं	हाँ
काल	नहीं	हाँ

द्रव्य कितने हैं?

जाति अपेक्षा द्रव्य
छह हैं

प्रत्येक द्रव्य
कितने-कितने हैं?

- » जीव - अनंत
- » पुद्गल - जीवों से
अनंतगुणे अर्थात्
अनंतानंत
- » धर्म, अधर्म, आकाश -
एक-एक
- » काल - असंख्यात

जीव के भेद

संसारि

कर्मसहित जीव,
जैसे- हम

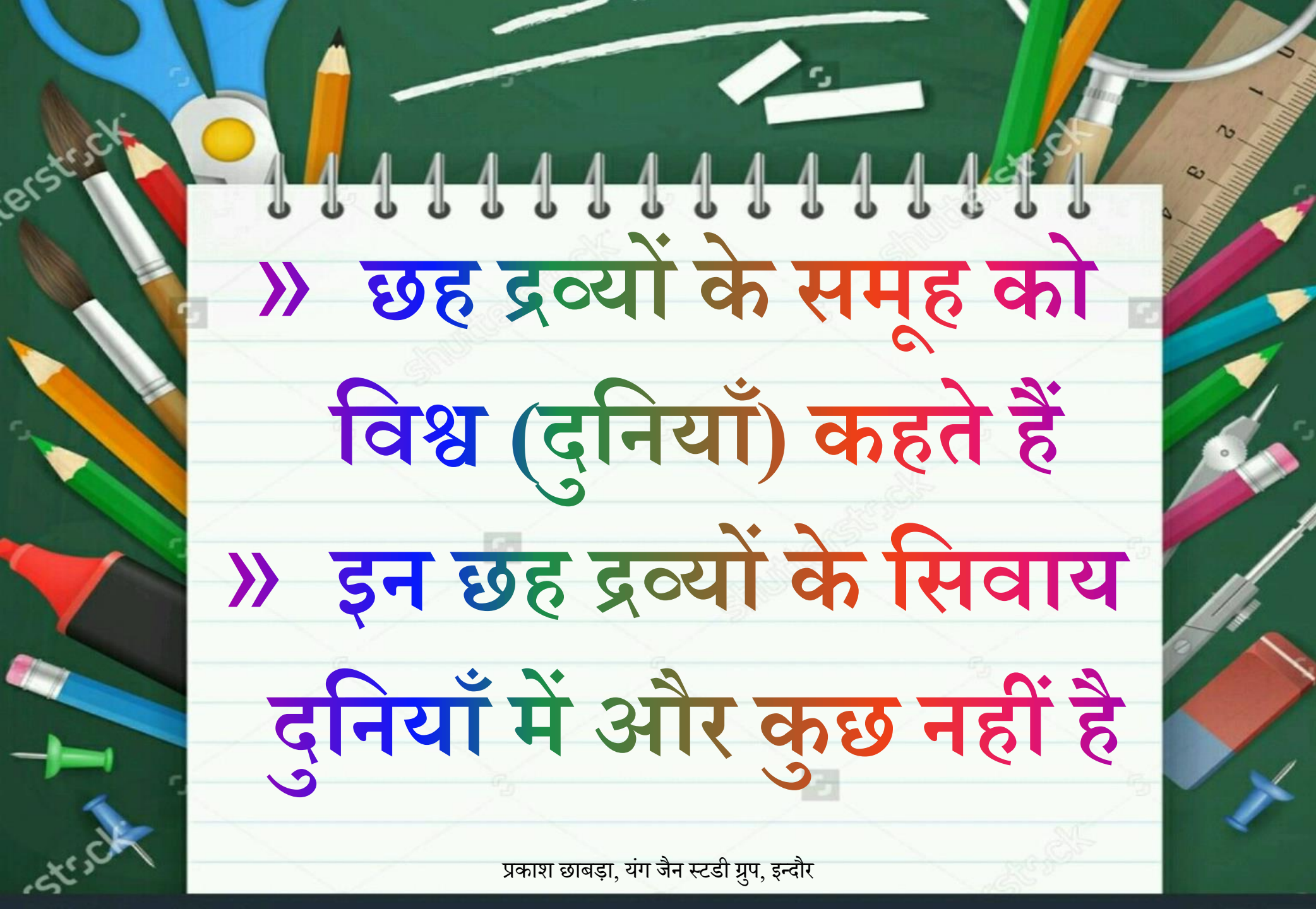
मुक्त

कर्मरहित जीव,
जैसे- सिद्ध



विश्व क्या है ?

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



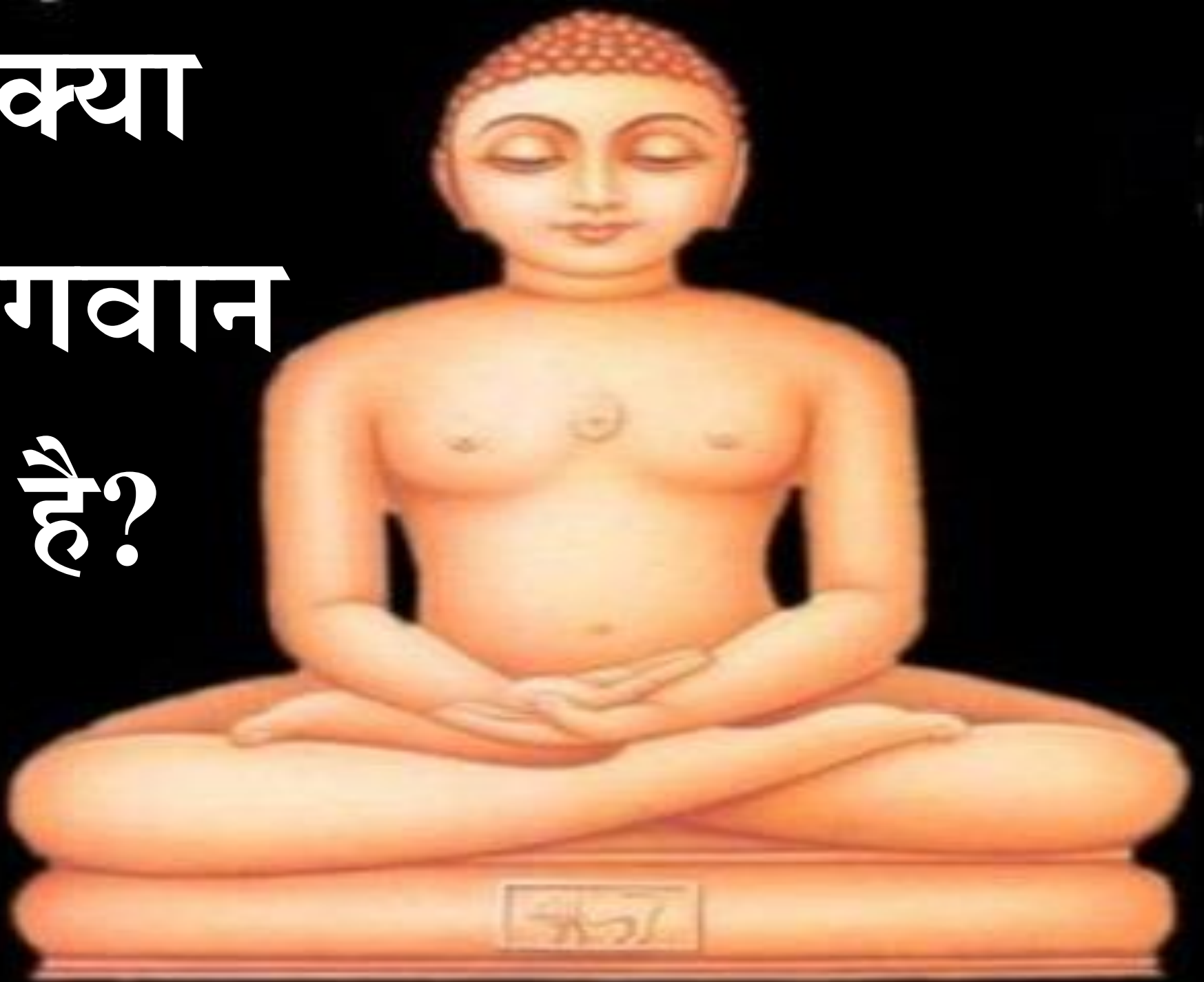
» छह द्रव्यों के समूह को
विश्व (दुनियाँ) कहते हैं

» इन छह द्रव्यों के सिवाय
दुनियाँ में और कुछ नहीं है



विश्व को बनाने वाला कौन है?

क्या
भगवान
है?





नहीं



तो फिर विश्व को बनाने वाला,
चलाने वाला, नष्ट करने वाला
कौन है?

कोई नहीं !!



विश्व अनादि अनंत
स्वनिर्मित है



तो फिर भगवान
का क्या कार्य है?

भगवान दुनियाँ को
जानते हैं, बनाते नहीं



आखिर दुनियाँ में जो कार्य होता
है, उनका कर्ता कोई तो होगा

» प्रत्येक द्रव्य अपने-अपने कार्य (पर्याय) का
स्वयं कर्ता है

» कोई किसी का कर्ता नहीं

» जो ऐसा मान लेता है, वही आगे चलकर
भगवान बनता है ।

द्रव्य को जानने से लाभ

- 
- » हम भी एक द्रव्य हैं, गुणों के पिंड हैं
- इससे दीनता की भावना मिटती है
 - » विश्व-व्यवस्था का ज्ञान होता है
 - » गृहीत मिथ्यात्व मिटता है
 - » ऐसा ज्ञान होता है कि -
भगवान कर्ता नहीं हैं

द्रव्य को जानने से लाभ

» मैं भी कर्ता नहीं हूँ

» जगह मेरी नहीं है

» परिणामन का कारण काल
द्रव्य है

» आदि अनेक लाभ हैं